ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-6* September-2020
Anthology : The Research

गोरखपुर जनपद में साक्षरता के स्थानिक एवं कालिक वितरण प्रतिरूप का अध्ययन

Study of Spatial and Temporal Distribution Model of Literacy In Gorakhpur District

Paper Submission: 15/09/2020, Date of Acceptance: 26/09/2020, Date of Publication: 27/09/2020

दुर्गावती यादव
शोध छात्रा,
भूगोल विभाग,
दीनदयाल उपाध्याय
गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र में गोरखपुर जनपद की साक्षरता दर के कालिक एवं क्षेत्रीय परिवर्तन का अध्ययन किया गया है। जनपद में नगरीय क्षेत्रों की साक्षरता दर सामान्यता ग्रामीण क्षेत्रों की साक्षरता दर की तुलना में अधिक है। भारत के अन्य क्षेत्रों के समान ही गोरखपुर जनपद में भी नगरीय साक्षरता दर अधिक है। महिला साक्षरता दर पुरूषों की तुलना में कम हैं, परन्तु नगरीय क्षेत्रों की स्त्री साक्षरता दर का स्तर ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में संतोषजनक कहा जा सकता है।

In the presented paper, the periodic and regional change of literacy rate of Gorakhpur district has been studied. The literacy rate of urban areas in the district is generally higher than the literacy rate of rural areas. Gorakhpur district has a similar urban literacy rate as other areas of India. Female literacy rates are lower than men, but the level of female literacy rate in urban areas can be said to be satisfactory compared to rural areas.

मुख्य शब्द : साक्षरता, प्रौढ़ शिक्षा, अर्थव्यवस्था, समाजिक–आर्थिक विकास।
Literacy, Adult Education, Economy, Socio-Economic Development.

प्रस्तावना

साक्षरता मानव के सर्वांगीण विकास की धुरी है। किसी भी क्षेत्र की समाजिक–आर्थिक विकास हेतु साक्षरता का विकास आवश्यक है। साक्षरता द्वारा ही समाजिक, आर्थिक, राजनैतिक प्रवृतियों में सम्बन्ध स्थापित करके, सम्पूर्ण समाज विकास क्रम में आगे बढ़ सकता है। साक्षरता निर्धारण के स्तर में विषमता होते हुए भी विश्व के बहुत से देशों की साक्षरता वितरण में क्षेत्रीय विषमता पायी जाती है, जो जनांकिकी, सामाजिक–आर्थिक तथ्यों से मिलने वाली विषमता का परिणाम होती है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध–पत्र के अध्ययन में निर्धारित उदेश्यों की पूर्ति के लिये दितियक आकड़ों को एकत्रित किया गया है। आकड़ें को जनगणना पुस्तिकायें तथा सांख्यिकीय पत्रिका से एकत्रित किया गया है। दितीयक आकड़ों के आधार पर विभिन्न उपर्युक्त सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर मानचित्र एवं आरेखों की सहायता से आकड़ों का विश्लेष्ण किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. गोरखपुर जनपद में साक्षरता दर का कालिक एवं क्षेत्रीय परिवर्तन का अध्ययन करना।
2. जनपद की साक्षरता दर का देश, प्रदेश तथा मण्डल से तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. विकासखण्डवार ग्रामीण साक्षरता का अध्ययन करना।
4. कुल साक्षरता के संदर्भ में महिला साक्षरता का अध्ययन करना।

विषयवस्तु

विश्व के कई विकासशील देशों की तुलना में हमारे भारत में साक्षरता का स्तर निम्न है। वर्तमान औद्योगिक एवं तकनीक युग में भी देश की अधिकांश जनसंख्या साक्षरता के महत्व से अनभिज्ञ है। भारत में ब्रिटिश काल तक शिक्षा

प्रणाली का प्रमुख उद्देश्य शासक वर्ग की सहायता हेतु एक वर्ग का निर्माण करना था, जो मन, वचन एवं कर्म से आंग्ल सभ्यता, संस्कृति एवं शासन का भक्त हो। शिक्षा प्रणाली इस सांचे में ढाली गयी थी, जिससे उन्हें अपना कार्य चलाने में सहायता मिल सके। इस सम्बन्ध में एलिजाबेथ का कथन है, कि यदि मैं शिक्षा प्रणाली पूरे देश में लागू कर दूंगी, तो हमें शासन करने में समस्या उत्पन्न हो जायेगी, क्योंकि हर शिक्षित व्यक्ति अपने विवेक पूर्ण ढंग से तर्क करेगा, कि क्या सही है और क्या गलत।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश में नियोजित आर्थिक विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। संविधान के नीति निर्देशक तत्वों में शिक्षा को उचित मान्यता प्रदान की गयी और कहा गया कि इस संविधान को लागू होने के दस वर्षो की अवधि में सभी बच्चों के लिए उनके 14 वर्ष की आयु तक राज्य निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रयत्न करेगा (पी0सी0 खरे, वी0सी0 सिन्हा, 1985)।

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार दैनिक जीवन में साधारण कथन को समझ लेने के साथ–साथ उसका पढ़कर लिख लेने की योग्यता रखना ही साक्षरता है, अर्थात जो व्यक्ति अपना नाम लिख – पढ़ ले उसे साक्षर कहा जाता है।

साक्षरता से तात्पर्य जनसंख्या के ऐसे वर्ग से लगाया जाता है, जो एक या एक से अधिक भाषाओं में अपने विचारों को लिखकर व्यक्त कर सके तथा लिखे हुए शब्दों को पढ़कर समझ सके (ट्रिवार्था, 1953)। साक्षरता ही किसी क्षेत्र के सामाजिक विकास का सूचक है।

साक्षरता ही वह कारक है, जो समाज में गतिशीलता पैदा करती है (चांदना एवं सिद्धू, 1980)। यह गरीबी उन्मूलन, स्वास्थ्य मानसिक विकास, अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री पूर्ण सम्बन्धों के निर्माण एवं जनतांत्रिक प्रक्रियाओं के स्वतंत्र संचालन के लिए आवश्यक तत्व है। साक्षरता की कमी के कारण मनुष्य में रूढ़िवादिता एवं मानसिक एकाकीपन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। साक्षरता दर जहां उच्च है, वे देश, प्रदेश आर्थिक रूप से सम्पन्न है। साक्षरता का प्रभाव जनांकिकीय तथ्यों जैसे–जन्मदर, मृत्युदर, प्रव्रजन, व्यावसायिक संरचना, नगरीकरण एवं औद्योगिक के विकास पर पड़ता है। साक्षरता स्तर के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक विकास का सूचक होने के कारण इसका विश्लेषण अति आवश्यक है।

ट्रिवार्था, (1969) के अनुसार साक्षरता की परिभाषा विभिन्न देशों में भिन्न–भिन्न है। कुछ देशों में मौखिक वार्तालाप की योग्यता, लिखना और गणितीय तथ्यों को जानना ही साक्षरता का द्योतक होता है, जबकि कुछ देशों में विद्यालय जाने की निश्चित अवधि को आधार माना जाता है। इसके विपरीत अधिकांश देशों में देश–विदेश की अधिकांश भाषा में पढ़ने–लिखने की योग्यता को साक्षर माना जाता है, जबकि कुछ देशों में अपनी मातृभाषा में एक सरल सूचना, लिख–पढ़ एवं समझ सकने की योग्यता को ही साक्षर मान लिया जाता है, जबकि फिनलैण्ड में एक निश्चित परीक्षा में उत्तीर्ण लोगों को ही साक्षर की श्रेणी में रखा जाता है।

भारतीय जनगणना विभाग ने साक्षरता की परिभाषा में समय–समय पर कुछ संशोधन किये है। 1971 की जनगणना के अनुसार–''वह व्यक्ति जो किसी भाषा को समझ सकता है और लिख व पढ़ सकता है, साक्षर कहलाता है।'' 1981 की जनगणना के अनुसार '' वह व्यक्ति जो किसी भाषा को पढ़ सकता है, लेकिन लिख नहीं सकता, साक्षर नहीं होगा अर्थात् उसमें किसी भाषा को समझने के साथ–साथ लिखने व पढ़ने दोनों की क्षमता निहित होनी चाहिए। 1991 की जनगणना के अनुसार ''वह व्यक्ति जिसने औपचारिक रूप से शिक्षा प्राप्त की हो या कोई परीक्षा पास की हो, वह 7 वर्ष से अधिक उम्र का हो, वह भाषा को समझने की योग्यता रखता हो, साक्षर कहलाता है।'' 2001 और 2011 की जनगणना में अपनाया गया– ''साक्षर व्यक्ति वह है, जो किसी भाषा में लिख एवं पढ़ सकता है, जिसकी उम्र 7 वर्ष से अधिक हो''।

वर्तमान समय में देश की तीव्र साक्षरता दर बढ़ाने के लिए प्रौढ़ शिक्षा अभियान, बच्चों को पुष्टाहार एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की गयी है, जिससे साक्षरता की दर में वृद्धि हो रही है। शिक्षा स्वयं सामाजिक, आर्थिक प्रगति प्रारम्भ नहीं करती, अपितु शिक्षा का अभाव विकास की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करता है (गोसले, 1964)।

शिक्षा की कमी राष्ट्रीय विकास में ही बाधा उत्पन्न नहीं करती, बल्कि इससे सामाजिक–आर्थिक प्रगति में भी अवरोध उत्पन्न होता है और साथ ही राष्ट्रीय सुरक्षा निर्बल होती है। यह समाज के तकनीकी विकास की गति को कम करती है और ऐसी प्रवृत्तियों को विकसित करती है, जिससे आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक विषमता एवं असहयोग उत्पन्न होते हैं। शिक्षा के माध्यम से ही जीवन के विकास का क्रम व दिशा निर्धारित होती है (एस0के0 श्रीवास्तव, 1990)। शिक्षा बच्चों में बौद्धिक विकास करने के साथ उन्हें परिवेशी विश्व को समझना एवं सामाजिक सम्बन्धों का अर्थ सिखाती है (तोलस्तोय, 1987)।

साक्षरता का महत्व

मानव शास्त्रीय दृष्टिकोण से साक्षरता का एक ऐसा सामाजिक पक्ष है, जिसके आधार पर सामाजिक विकास का मापदण्ड निश्चित किया जा सकता है। चेस्टर वाल्स के अनुसार– प्राकृतिक शक्तियों के नियंत्रण एवं सदुपयोग करने तथा व्यवस्थित प्रवेशिका व न्यायपूर्ण समाज का सृजन करने में शिक्षा सभी उपकरणों में सबसे अधिक शाक्तिशाली है। साक्षरता किसी देश, प्रदेश अथवा क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास का सूचक है, इससे किसी भी समाज के आधुनिकीकरण के स्तर का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, जो विवाह, जन्मदर, मृत्युदर आदि को प्रभावित करता है। साक्षरता से विवाह के समय स्त्री–पुरूष की आयु प्रभावित होती है, जो प्रत्यक्ष रूप से जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करती है। साक्षरता के आधार पर ही विकास की योजनाएं और शिक्षा नीति निर्धारित की जाती है। शिक्षा ही वह सबसे बड़ा तत्व है, जिसके द्वारा सामाजिक–आर्थिक, कला एवं विज्ञान संबंधी विकास की प्रगति हो सकती है। शिक्षा के अभाव में देशवासियों में

मानसिक अलगाव बढ़ता है एवं देश आर्थिक दृष्टि से गरीब हो जाता है। प्रजातांत्रिक ढांचे में स्वतंत्र रूप से कार्य करने में बाधाएं उत्पन्न होती हैं, एवं परम्परावादी, भाग्यवादी, निराशावादी एवं रूढ़िवादी विचारधाराएं पनपती हैं। अतः किसी क्षेत्र विशेष की अर्थव्यवस्था एवं साक्षरता एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। इसी कारण कृषि प्रधान अर्थतंत्र व्यवस्था वाले क्षेत्रों में कम साक्षरता और औद्योगिक प्रधान अर्थतंत्र वाले क्षेत्रों में उच्च साक्षरता पायी जाती है (सतीश चंद तिवारी, 2007)।

स्पष्ट है, कि साक्षरता सामाजिक–आर्थिक विकास का सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है, जिसके अभाव में मानव समाज में कोई अस्तित्व ही नहीं है। अतः साक्षरता मनुष्य के सर्वांगीण विकास का नियामक तत्व है, जिसके कारण मानव को धरातल का सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहा जाता है।

स्थिति एवं विस्तार

देश की मध्य – उत्तर सीमा से संलग्न उत्तर प्रदेश के पूर्वोत्तर अंचल में स्थित गोरखपुर जनपद का विस्तार 26°13′ उत्तरी से 27°6′ उत्तरी अक्षांश तथा 83°5′ पूर्वी देशान्तर से 83°40′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। सरयूपार मैदान के पूर्वी भाग में 3321 वर्ग किमी0 क्षेत्रफल पर विस्तृत यह जनपद उत्तर प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 1.44 प्रतिशत है। इसकी पूर्व से पश्चिम अधिकतम चौड़ाई 105 किमी0 है। जिला मुख्यालय अध्ययन क्षेत्र के मध्य भाग में राप्ती एवं रोहिनी नदियों के संगम पर सागर तल से 102 मी0 की ऊंचाई पर (लखनऊ– बरौनी मुख्य रेलमार्ग पर) स्थित है। इसकी भौगोलिक अवस्थिति कलकत्ता (846किमी0) तथा दिल्ली (763 किमी0) के लगभग मध्य तथा इलाहाबाद एवं वाराणसी से क्रमशः 265 किमी0 एवं 210 किमी उत्तर, लखनऊ से 256 किमी0 पूर्व तथा भारत नेपाल सीमा से 100 किमी0 दक्षिण की दूरी पर है। गोरखपुर जनपद उत्तर, दक्षिण, पूर्व, एवं पश्चिम में जनपदीय सीमाओं से परिवेष्ठित है। इसकी उत्तरी सीमा पर महराजगंज, पूर्वी सीमा देवरिया, पश्चिमी सीमा संतकबीरनगर एवं शिद्धार्थनगर जनपद से निर्धारित होती है तथा दक्षिणी सीमा का निर्धारण घाघरा नदी प्रवाह मार्ग द्वारा होता है। दक्षिणी सीमा से संलग्न जनपद पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः अम्बेडकर नगर, आजमगढ़, मऊ एवं बलिया जनपद हैं।

साक्षरता का कालिक एवं स्थानिक वितरण प्रतिरूप 2001–2011 दशक

गोरखपुर जनपद में साक्षरता दर का अध्ययन कालिक एवं क्षेत्रीय संदर्भ में किया गया है। 2001 तथा 2011 के दशकों में हुए परिवर्तन का अध्ययन जनपद के विकास खण्ड स्तर पर किया गया है, जिससे जनपद में पायी जाने वाली साक्षरता वितरण की विभिन्नतायें तथा विशिष्टतायें अधिक स्पष्ट होती है तथा साक्षरता के क्षेत्रीय वितरण को समझने में सहायता मिलती है।

तालिका 1 गोरखपुर जनपद : साक्षरता प्रतिरूप, 2001–2011 दशक

क्र0सं0	साक्षरता (प्रतिशत में)					
	2001			2011		
	कुल	पुरूष	स्त्री	कुल	पुरूष	स्त्री
गोरखपुर जनपद	58.49	73.57	42.88	70.83	81.80	59.36
गोरखपुर मण्डल	53.47	69.62	36.81	67.91	79.91	55.59
उत्तर प्रदेश	56.27	68.82	42.22	67.68	77.28	57.18
भारत	64.84	75.26	53.63	72.99	80.89	64.64

स्त्रोत : जनगणना निर्देशालय, लखनऊ, 2001–2011।

साक्षरता के क्षेत्रीय वितरण में देश के समान ही अध्ययन क्षेत्र में भी काफी विभिन्नतायें दृष्टिगत हैं (तालिका 1)।

तालिका 1 के अध्ययन से स्पष्ट है कि वर्ष 2001 में गोरखपुर जनपद की कुल साक्षरता दर 58.49 प्रतिशत है, जबकि मण्डल तथा प्रदेश की कुल साक्षरता जनपद से कम क्रमशः 53.47 प्रतिशत तथा 56.27 प्रतिशत एवं देश की कुल साक्षरता जनपद से अधिक 64.84 प्रतिशत है। 2001 के बाद से साक्षरता दर में निरन्तर वृद्धि के कारण 2011 में जनपद की कुल साक्षरता बढ़कर 70.83 प्रतिशत, मण्डल की 67.91 प्रतिशत तथा प्रदेश की 67.61 प्रतिशत हो गयी। परन्तु इस वृद्धि के बाद भी जनपद की साक्षरता देश की साक्षरता दर (72.99 प्रतिशत) से कम रह गयी। वर्ष 2001 में जनपद की कुल पुरूष साक्षरता 73.57 प्रतिशत, मण्डल तथा प्रदेश की साक्षरता दर क्रमशः 69.62 प्रतिशत, 68.82 प्रतिशत हैं, जो देश की कुल पुरूष साक्षरता (75.26 प्रतिशत) से कम है। वर्ष 2011 में जनपद की कुल पुरूष साक्षरता 81.80 प्रतिशत रही, जो मण्डल (79.91 प्रतिशत) तथा प्रदेश (77.28 प्रतिशत) की साक्षरता दर से अधिक है। स्पष्ट है, कि अध्ययन क्षेत्र की साक्षरता दर मण्डल तथा प्रदेश की तुलना में तो अधिक है, परन्तु देश की साक्षरता दर तक नहीं पहुंच पायी है। इसी क्रम में यदि हम स्त्री साक्षरता की स्थिति को देखें तो विदित होता है कि 2001 में जनपद की कुल स्त्री साक्षरता 42.88 प्रतिशत, मण्डल तथा प्रदेश की कुल स्त्री साक्षरता क्रमशः 36.81 प्रतिशत, 42.22 प्रतिशत तथा देश की कुल स्त्री साक्षरता 53.63 प्रतिशत है, जो पुरूष साक्षरता से काफी कम है। वर्ष 2011 में स्त्री साक्षरता में वृद्धि देखने को तो मिली, जिसमें जनपद में साक्षरता 59.36 प्रतिशत, मण्डल में 55.59 प्रतिशत, प्रदेश में 57.18 प्रतिशत तथा देश में 64.64 प्रतिशत हो गयी। वर्ष 2001 की अपेक्षा 2011 में स्त्री शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया, जिससे स्त्रियों की साक्षरता दर में वृद्धि हुई है, लेकिन ये वृद्धि दर अभी पुरूष साक्षरता दर से कम है।

ग्रामीण साक्षरता प्रतिरूप (2001–2011 दशक)

भारतीय संदर्भ के समान ही जनपद में ग्रामीण साक्षरता में अंतर मिलता है, साथ ही ग्रामीण स्त्री साक्षरता

भी कम पाई जाती है। जनपद की स्त्री साक्षरता प्रदेश से कम तथा देश की तुलना में काफी कम पाई गयी है (तालिका 2)।

तालिका : 2 गोरखपुर जनपद : ग्रामीण साक्षरता प्रतिरूप, 2001–2011 दशक

क्र0सं0	साक्षरता (प्रतिशत में)					
	2001			2011		
	कुल	पुरूष	स्त्री	कुल	पुरूष	स्त्री
गोरखपुर जनपद	53.65	70.55	36.54	68.02	80.30	55.35
गोरखपुर मण्डल	50.68	67.73	33.27	66.34	79.04	53.40
उत्तर प्रदेश	52.53	66.59	36.90	65.46	76.33	53.65
भारत	58.74	70.70	46.13	67.77	77.15	57.93

स्त्रोत : जनगणना निर्देशालय, लखनऊ, 2001–2011।

वर्ष 2001 में गोरखपुर जनपद की कुल ग्रामीण साक्षरता दर 53.65 प्रतिशत थी, जबकि मण्डल की कुल ग्रामीण साक्षरता 50.68 प्रतिशत थी, प्रदेश की कुल ग्रामीण साक्षरता 52.53 प्रतिशत तथा देश की कुल ग्रामीण साक्षरता 58.74 प्रतिशत थी। स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र की साक्षरता की स्थिति गोरखपुर मण्डल तथा उत्तर प्रदेश के संदर्भ में सन्तोषजनक, परन्तु भारत के औसत से बहुत कम रही। 2011 में साक्षरता दर में वृद्धि के कारण वर्ष 2011 में जनपद की कुल ग्रामीण साक्षरता बढ़कर मण्डल (66.34 प्रतिशत), प्रदेश (65.46 प्रतिशत) तथा देश की साक्षरता दर (67.77 प्रतिशत) से अधिक 68.02 प्रतिशत हो गयी है। तालिका 4.2 से स्पष्ट है, कि वर्ष 2001 की अपेक्षा वर्ष 2011 में ग्रामीण साक्षरता दर शैक्षिक सुविधाओं के निरन्तर तथा जागरूकता में वृद्धि के कारण साक्षरता दर में अधिक वृद्धि अनुभव की गयी है। इसी प्रकार वर्ष 2001 में जनपद की ग्रामीण पुरूष साक्षरता दर मण्डल (67.73 प्रतिशत), प्रदेश (66.59 प्रतिशत) से तो अधिक (70.55 प्रतिशत), परन्तु देश की साक्षरता (70.70 प्रतिशत) से थोड़ी कम है। वर्ष 2011 में जनपद की कुल ग्रामीण पुरूष साक्षरता (80.30 प्रतिशत) वर्ष 2001 (70.55 प्रतिशत) की तुलना में अधिक वृद्धि के कारण अधिक हुयी। यह वृद्धि मण्डल की साक्षरता (79.04 प्रतिशत), प्रदेश की साक्षरता (76.33 प्रतिशत) तथा देश की साक्षरता (77.15 प्रतिशत) से भी अधिक हो गयी। इसी क्रम में ग्रामीण स्त्री साक्षरता के अध्ययन से यह विदित होता है, कि 2001 में जनपद की कुल ग्रामीण स्त्री साक्षरता 36.54 प्रतिशत थी, जो मण्डल की ग्रामीण स्त्री साक्षरता (33.27 प्रतिशत) से तो अधिक परन्तु प्रदेश (36.90 प्रतिशत) तथा देश (46.13 प्रतिशत) की साक्षरता दर से कम रही। जनगणना 2011 में जनपद की कुल स्त्री साक्षरता बढ़कर 55.35 प्रतिशत हो गयी। ग्रामीण स्त्री साक्षरता की यह वृद्धि मण्डल (53.40 प्रतिशत) तथा प्रदेश (53.65 प्रतिशत) से तो अधिक परन्तु देश की स्त्री साक्षरता (57.93 प्रतिशत) से कम है। 2001 की अपेक्षा 2011 में स्त्री साक्षरता दर में तो वृद्धि हुई परन्तु फिर भी स्त्री साक्षरता की अपेक्षित दर नहीं प्राप्त हो पायी।

विकासखण्डवार ग्रामीण साक्षरता 2001–2011

जनपदीय स्तर पर साक्षरता दर क्षेत्र की साक्षरता दर के क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप को स्पष्ट नहीं कर पाती है। अतः जनगणना 2001–2011 के आकड़ों के अनुसार गोरखपुर जनपद की ग्रामीण साक्षरता को विकासखण्डवार प्रस्तुत किया गया है। जनपद की ग्रामीण साक्षरता के औसत (68.02 प्रतिशत) के आधार पर विकासखण्डों को निम्न पांच संवर्गो में विभक्त किया गया है (तालिका 3, चित्र सं.1) जिससे क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप की विशिष्टताओं को स्पष्ट किया जा सकता है।

1. अति उच्च ग्रामीण साक्षरता संवर्ग (>71 प्रतिशत)।
2. उच्च ग्रामीण साक्षरता संवर्ग (69–71 प्रतिशत)।
3. मध्यम ग्रामीण साक्षरता संवर्ग (67–69 प्रतिशत)।
4. निम्न ग्रामीण साक्षरता संवर्ग (65–67 प्रतिशत)।
5. अति निम्न साक्षरता संवर्ग (< 65 प्रतिशत)।

तालिका :3 गोरखपुर जनपद, ग्रामीण साक्षरता प्रतिरूप 2001–2011 दशक

क्र0 सं0	ग्रामीण साक्षरता संवर्ग प्रतिशत में	संवर्ग मान	विकासखण्डों की संख्या 2001	2011	विकासखण्ड का नाम 2011
1.	>71	अति उच्च	–	05	कौड़ीराम, उरूवा, गोला, गगहा, खजनी
2.	69–71	उच्च	–	05	बंसगांव, सहजनवां, पिपरौली, बड़हलगंज, पाली।
3.	67–69	मध्यम	–	02	बेलघाट, पिपराइच।
4.	65–67	निम्न	–	04	जंगलकौड़िया, ब्रह्मपुर, सरदारनगर, खोराबार।
5.	< 65	अतिनिम्न	19	03	भटहट, कैम्पियरगंज, चरगावां।

स्रोत : शोधार्थी द्वारा परिगणित।

अति उच्च ग्रामीण साक्षरता संवर्ग (>71प्रतिशत)

अति उच्च ग्रामीण साक्षरता संवर्ग के अन्तर्गत 71 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण सक्षरता दर वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। इस संवर्ग में वर्ष 2001 में जनपद का कोई भी विकासखण्ड सम्मलित नहीं हैं, वहीं वर्ष 2011 में कौड़ीराम अधिकतम (73.19 प्रतिशत), उरूवा (71.99 प्रतिशत), गोला (71.88 प्रतिशत), गगहा (71.41 प्रतिशत) तथा खजनी (न्यनूतम 71.17 प्रतिशत) सम्मिलित है।

उच्च ग्रामीण साक्षरता संवर्ग (69–71 प्रतिशत)

उच्च संवर्ग के अन्तर्गत 69–71 प्रतिशत के मध्य ग्रामीण साक्षरता वाले विकासखण्डों को समिल्लित किया गया है। इस संवर्ग में वर्ष 2001 में जनपद का एक भी विकासखण्ड सम्मिलित नहीं है। वर्ष 2011 में इस संवर्ग में जनपद के पांच विकासखण्ड सम्मिलित है, जो क्रमशः

बांसगांव (70.91 प्रतिशत अधिकतम), सहजनवां (70.52 प्रतिशत), पिपरौली (70.13 प्रतिशत), बड़हलगंज (69.94 प्रतिशत) तथा पाली (69.11 प्रतिशत, न्यूनतम) है।

मध्यम ग्रामीण साक्षरता संवर्ग (67–69 प्रतिशत)

मध्यम ग्रामीण साक्षरता संवर्ग के अन्तर्गत 67–69 प्रतिशत साक्षरता वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। वर्ष 2001 में इस संवर्ग के अन्तर्गत जनपद के कोई भी विकासखण्ड सम्मिलित नहीं हैं, परन्तु वर्ष 2011 में इस संवर्ग के अन्तर्गत जनपद के दो विकासखण्ड क्रमशः बेलघाट (68.30 प्रतिशत) तथा पिपराइच (67.35 प्रतिशत) सम्मिलित हो गये है।

चित्र सं.1

निम्न ग्रामीण साक्षरता संवर्ग (65–67 प्रतिशत)

निम्न ग्रामीण साक्षरता संवर्ग के अन्तर्गत 65–67 प्रतिशत के मध्य ग्रामीण साक्षरता वाले विकाखण्डों 89को सम्मिलित किया गया है। इस संवर्ग के अन्तर्गत भी वर्ष 2001 में जनपद का एक भी विकासखण्ड सम्मिलित नहीं है, जबकि वर्ष 2011 में जनपद के चार विकासखण्ड सम्मिलित हैं, जो क्रमशः जंगल कौड़िया (66.91 प्रतिशत), खोराबार (66.74 प्रतिशत), ब्रह्मपुर (65.64 प्रतिशत) तथा सरदारनगर (66.04 प्रतिशत) हैं।

अति न्यून ग्रामीण साक्षरता संवर्ग (<65 प्रतिशत)

अति न्यून ग्रामीण साक्षरता संवर्ग के अन्तर्गत 65 प्रतिशत से कम ग्रामीण साक्षरता वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। वर्ष 2001 में इस संवर्ग के अन्तर्गत जनपद के समस्त 19 विकासखण्ड सम्मिलित हैं तथा वर्ष 2011 में इस संवर्ग में जनपद के तीन विकासखण्ड क्रमशः भटहट (62.37 प्रतिशत), कैम्पियरगंज (61.85 प्रतिशत) तथा चरगांवा (61.03 प्रतिशत) ही रह गये है।

ग्रामीण पुरूष साक्षरता, 2001–2011 दशक

गोरखपुर जनपद में ग्रामीण पुरूष साक्षरता वर्ष 2001–2011 के आकड़ों के आधार पर प्राप्त औसत (80. 56) को ध्यान में रखकर अध्ययन की दृष्टि से विकासखण्डों को पांच संवर्गों में विभक्त किया गया है (तालिका : 4 चित्र सं. 2)।

1. अति उच्च ग्रामीण पुरूष साक्षरता संवर्ग (>84 प्रतिशत)।
2. उच्च ग्रामीण पुरूष साक्षरता संवर्ग (82–84 प्रतिशत)।
3. मध्यम ग्रामीण पुरूष साक्षरता संवर्ग (80–82 प्रतिशत)।
4. निम्न ग्रामीण पुरूष साक्षरता संवर्ग (78–80 प्रतिशत)।
5. अति निम्न ग्रामीण पुरूष साक्षरता संवर्ग (<78 प्रतिशत)।

तालिका : 4 गोरखपुर जनपद : ग्रामीण पुरूष साक्षरता 2001–2011 दशक

क्रम सं0	ग्रामीण पुरूष साक्षरता प्रतिशत में	संवर्ग	विकासखण्डों की संख्या		विकासखण्डों का नाम 2011
			2001	2011	
1.	>84	अति उच्च	–	02	गोला, कौड़ीराम।
2.	82–84	उच्च	–	05	सहजनवां, बांसगांव, खजनी, गगहा, उरूवा।
3.	80–82	मध्यम	–	05	पिपराइच, बेलघाट, पाली, पिपरौली, बड़हलगंज।
4.	78–80	निम्न	–	04	खोराबार, जंगलकौड़िया, ब्रह्मपुर, सरदारनगर।
5.	< 78	अति निम्न	19	03	कैम्पियरगंज, भटहट, चरगावां।

स्त्रोतः शोधार्थी द्वारा परिगणित।

अति उच्च ग्रामीण पुरूष साक्षरता वाले क्षेत्र (>84 प्रतिशत)

अति उच्च ग्रामीण पुरूष साक्षरता के अंतर्गत 84 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण पुरूष साक्षरता वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। इस संवर्ग में वर्ष 2001 में जनपद का कोई भी विकासखण्ड सम्मिलित नहीं है, जबकि वर्ष 2011 में जनपद के दक्षिणी भाग के दो विकासखण्ड कौड़ीराम (84.58 प्रतिशत) तथा गोला (84.16 प्रतिशत) सम्मिलित हो गये है।

उच्च ग्रामीण पुरूष साक्षरता वाले क्षेत्र (82–84 प्रतिशत)

उच्च ग्रामीण पुरूष साक्षरता संवर्ग के अंतर्गत 82–84 प्रतिशत के मध्य ग्रामीण पुरूष साक्षरता वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। वर्ष 2001 में इस संवर्ग के अन्तर्गत एक भी विकासखण्ड सम्मिलित नहीं हैं, परन्तु वर्ष 2011 में इस संवर्ग में जनपद के पांच विकासखण्ड सम्मिलित हैं, जो क्रमशः खजनी (83.50 प्रतिशत), गगहा (83.41 प्रतिशत), सहजनवां (82.97 प्रतिशत), उरूवा (83.91 प्रतिशत) तथा बांसगांव(82. 31प्रतिशत)है।

मध्यम ग्रामीण पुरूष साक्षरता वाले क्षेत्र (80–82 प्रतिशत)

मध्यम ग्रामीण पुरूष साक्षरता संवर्ग के अंतर्गत 80–82 प्रतिशत के मध्य ग्रामीण पुरूष साक्षरता वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। वर्ष 2001 में इस संवर्ग के अन्तर्गत जनपद का कोई भी विकासखण्ड सम्मिलित नहीं हैं, जबकि वर्ष 2011 में इस संवर्ग के अन्तर्गत पाली (81.85 प्रतिशत), पिपरौली (81.81 प्रतिशत), बड़हलगंज (81.13 प्रतिशत), पिपराइच (80.27 प्रतिशत)

तथा बेलघाट (80.27 प्रतिशत) कुल पांच विकासखण्ड सम्मिलित हैं।

निम्न ग्रामीण पुरूष साक्षरता वाले क्षेत्र (78–80 प्रतिशत)

निम्न ग्रामीण पुरूष साक्षरता संवर्ग के अंतर्गत 78–80 प्रतिशत के मध्य के ग्रामीण पुरूष साक्षरता वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। वर्ष 2001 में इस संवर्ग के अन्तर्गत जनपद का कोई भी विकासखण्ड सम्मिलित नहीं हैं, जबकि वर्ष 2011 में इस संवर्ग के अन्तर्गत जनपद का जंगलकौड़िया (79.83 प्रतिशत), सरदारनगर (79.03 प्रतिशत), ब्रह्मपुर (79.03 प्रतिशत) तथा खोराबार (78.86) कुल चार विकासखण्ड सम्मिलित हैं।

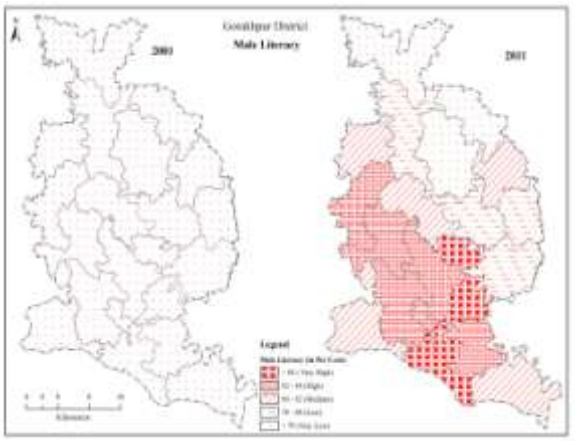

चित्र सं. 2

अति निम्न ग्रामीण पुरूष साक्षरता वाले क्षेत्र (<78 प्रतिशत)

अति निम्न ग्रामीण पुरूष साक्षरता संवर्ग के अन्तर्गत 78 प्रतिशत से कम ग्रामीण पुरूष साक्षरता वाले विकासखण्ड को सम्मिलित किया गया है। वर्ष 2001 में इस संवर्ग के अन्तर्गत जनपद के कुल 19 विकासखण्ड सम्मिलित हैं, जो क्रमशः कौड़ीराम (76.74 प्रतिशत) तथा खजनी (76.03 प्रतिशत), गोला (75.98 प्रतिशत), उरूवा (75.24 प्रतिशत), बांसगांव (74.88 प्रतिशत), पाली (74.68 प्रतिशत), गगहा (74.11 प्रतिशत), सहजनवां (73.55 प्रतिशत), पिपरौली (72.78 प्रतिशत), बड़हलगंज (71.04 प्रतिशत), पिपराइच (70.40 प्रतिशत), ब्रह्मपुर (70.36 प्रतिशत), सरदारनगर (69.34 प्रतिशत), जंगल कौड़िया (69.16 प्रतिशत), खोराबार (68.04 प्रतिशत), बेलघाट (67. 93 प्रतिशत), कैम्पियरगंज (64.34 प्रतिशत), भटहट (63.03 प्रतिशत) तथा चरगांवा (59.74 प्रतिशत) हैं, जबकि, वर्ष 2011 में इस संवर्ग के अन्तर्गत कैम्पियरगंज (75.44 प्रतिशत), भटहट (74.91 प्रतिशत) तथा चरगांवा (72.43 प्रतिशत) कुल तीन विकासखण्ड ही सम्मिलित हैं।

ग्रामीण स्त्री साक्षरता 2001–2011 दशक

जनपद में ग्रामीण स्त्री साक्षरता का स्तर समान्यतया पुरूष ग्रामीण साक्षरता की तुलना में निम्न है, परन्तु इसका क्षेत्रीय वितरण सम्पूर्ण जनपद में एक समान नहीं मिलता है। कुछ विकासखण्डों में स्त्री साक्षरता का स्तर अत्यन्त निम्न है, तो कुछ विकासखण्डों में अति उच्च है। अतः ग्रामीण स्त्री साक्षरता के क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप की विभिन्नताओं तथा विशिष्टताओं के अध्ययन के लिए वर्ष 2001 तथा 2011 के आकड़ों के आधार पर 2011 की औसत (55.54) ग्रामीण स्त्री साक्षरता के आधार पर जनपद के विकासखण्डों को पांच संवर्गों में विभक्त किया गया है, (तालिका : 5, चित्र सं.3)।

तलिका :5 गोरखपुर जनपद : ग्रामीण स्त्री साक्षरता वर्ष 2001–2011 दशक

क्रम सं0	ग्रामीण स्त्री साक्षरता प्रतिशत में	संवर्ग	विकासखण्डों की संख्या		विकासखण्डों का नाम 2011
			2001	2011	
1.	>60	अति उच्च	–	01	कौड़ीराम।
2.	56.–60	उच्च	–	09	सहजनवां, बांसगांव, पिपरौली, बड़हलगंज , गोला, बेलघाट, खजनी, गगहा, उरूवा।
3.	52–56	मध्यम	–	06	पली, जंगलकौड़िया ,पिपराइच, सरदारनगर, खोराबार, ब्रह्मपुर।
4.	48–52	निम्न	–	02	चरगावां, भटहट।
5.	<48	अति निम्न	19	01	कैम्पियरगंज ।

अति उच्च ग्रामीण स्त्री साक्षरता संवर्ग (>60 प्रतिशत)

अति उच्च ग्रामीण स्त्री साक्षरता संवर्ग के अंतर्गत 60 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण स्त्री साक्षरता के विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। इस संवर्ग में वर्ष 2001 में जनपद का एक भी विकासखण्ड सम्मिलित नहीं है, वहीं वर्ष 2011 में इस संवर्ग में जनपद का मात्र एक विकासखण्ड कौड़ीराम सम्मिलित है, जिसमें सर्वाधिक ग्रामीण स्त्री साक्षरता (62.01 प्रतिशत) पायी जाती है।

उच्च ग्रामीण स्त्री साक्षरता संवर्ग (56–60 प्रतिशत)

उच्च ग्रामीण स्त्री साक्षरता संवर्ग के अन्तर्गत 56–60 प्रतिशत के मध्य ग्रामीण स्त्री साक्षरता वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। इस संवर्ग में वर्ष 2001 में जनपद का एक भी विकासखण्ड सम्मिलित नहीं वही वर्ष 2011 में इस संवर्ग में जनपद के 9 विकासखण्ड उरूवा (59.96 प्रतिशत), गोला (59.71 प्रतिशत), गगहा (59.65 प्रतिशत), बांसगांव (59.37 प्रतिशत), बेलघाट, बड़हलगंज (58.75 प्रतिशत), खजनी (58.39 प्रतिशत), पिपरौली (57.82 प्रतिशत) तथा सहजनवां (57.62 प्रतिशत) सम्मिलित हैं।

मध्यम ग्रामीण स्त्री साक्षरता संवर्ग (52–56 प्रतिशत)

मध्यम ग्रामीण स्त्री साक्षरता संवर्ग के अन्तर्गत 52–56 प्रतिशत के मध्य ग्रामीण स्त्री साक्षरता वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। वर्ष 2001 में इस संवर्ग के अन्तर्गत कोई भी विकासखण्ड सम्मिलित नहीं है, परन्तु वर्ष 2011 में इस संवर्ग के अन्तर्गत जनपद

के 6 विकासखण्ड सम्मिलित हैं, जो क्रमशः पाली (55.78 प्रतिशत), खोराबार (54.08 प्रतिशत), पिपराइच (53.67 प्रतिशत), जंगलकौड़िया (53.01 प्रतिशत), सरदारनगर (52. 61 प्रतिशत) तथा ब्रह्मपुर (52.33 प्रतिशत) हैं।

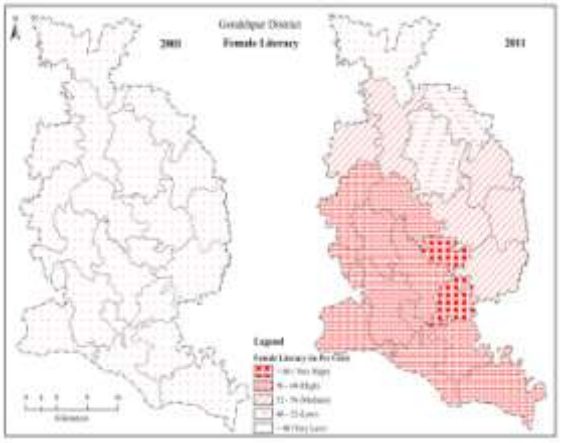

चित्र सं. 3

निम्न ग्रामीण स्त्री साक्षरता संवर्ग (48–52 प्रतिशत)

निम्न ग्रामीण स्त्री साक्षरता संवर्ग के अन्तर्गत 48–52 प्रतिशत वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। वर्ष 2001 में इस संवर्ग में एक भी विकासखण्ड सम्मिलित नहीं है, वहीं वर्ष 2011 में इस संवर्ग के अन्तर्गत जनपद के मध्यवर्ती भाग में स्थित विकासखण्ड भटहट (49.16 प्रतिशत) तथा चरगावां (48.62 प्रतिशत) सम्मिलित है।

अति न्यून ग्रामीण स्त्री साक्षरता संवर्ग (<48 प्रतिशत)

अति न्यून ग्रामीण स्त्री साक्षरता संवर्ग के अन्तर्गत 48 प्रतिशत से कम स्त्री साक्षरता वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। वर्ष 2001 के सम्पूर्ण विकासखण्ड इस संवर्ग में सम्मिलित हैं, जबकि वर्ष 2011 में इस संवर्ग के अन्तर्गत केवल एक ही विकासखण्ड कैम्पियरगंज सम्मिलित है, जो जनपद के उत्तरी भाग में स्थित है, जहां की स्त्री साक्षरता 47.12 प्रतिशत तथा क्षेत्र की न्यूनतम है।

नगरीय साक्षरता 2001–2011 दशक

सामान्यता नगरीय क्षेत्रों में साक्षरता का स्तर ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक पाया जाता है। भारत के अन्य क्षेत्रों में समान ही गोरखपुर जनपद में भी नगरीय साक्षरता दर अधिक पायी जाती है। नगरीय क्षेत्रों के समान ही महिला साक्षरता दर पुरूषों की तुलना में कम पायी जाती हैं, परन्तु नगरीय क्षेत्रों की स्त्री साक्षरता दर का स्तर ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में संतोषजनक कहा जा सकता है। नगरीय साक्षरता दर का प्रत्यक्ष सम्बन्ध नगरीय आकार से भी होता है। अतः जनपद, मण्डल, प्रदेश तथा देश की नगरीय साक्षरता के तुलनात्मक अध्ययन का प्रयास किया गया है (तालिका :6)।

तालिका :6 : गोरखपुर जनपद : नगरीय साक्षरता 2001–2011 दशक

क्र0सं0	नगरीय साक्षरता (प्रतिशत में)					
	2001			2011		
	कुल	पुरूष	स्त्री	कुल	पुरूष	स्त्री
गोरखपुर जनपद	77.09	84.59	68.64	82.39	87.76	76.46
गोरखपुर मण्डल	75.08	83.59	65.57	80.66	86.69	74.08
उत्तर प्रदेश	69.75	76.76	61.73	75.14	80.45	69.22
भारत	79.92	86.27	72.86	84.11	88.76	79.11

स्त्रोत : जनगणना निर्देशालय, लखनऊ, 2011।

वर्ष 2001 में गोरखपुर जनपद की कुल नगरीय साक्षरता मण्डल की कुल नगरीय साक्षरता (75.08 प्रतिशत) तथा प्रदेश की कुल नगरीय साक्षरता (69.75 प्रतिशत) से अधिक 77.09 प्रतिशत है, एवं देश की कुल नगरीय साक्षरता जनपद से कम (79.92 प्रतिशत) है। वर्ष 2011 में जनपद की नगरीय साक्षरता बढ़कर 82.39 प्रतिशत हो गयी, जो मण्डल (80.66 प्रतिशत) तथा प्रदेश (75.14 प्रतिशत) से अधिक है, परन्तु जनपद की नगरीय साक्षरता देश की नगरीय साक्षरता 84.11 प्रतिशत से कम हो गयी। 2001 में जनपद की नगरीय पुरूष साक्षरता 84. 59 प्रतिशत हो गयी जो मण्डल 83.59 प्रतिशत तथा प्रदेश 76.76 प्रतिशत की साक्षरता से अधिक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *खरे, पी0सी0 एवं सिन्हा, वी0सी0 (1985) : सामाजिक जनांकिकीय एवं भारत में जन स्वास्थ्य, प्रकाशन पृष्ठ संख्या : 55*
2. *Trewartha, G.T. (1953) : A Case for Population Geography, Annals of the Association of American Geographers, Vol. – 43,:72*
3. *Chandana, R.C. and Siddhu, M.S. (1980): Population Geography, Kalyani Publishers, New Delhi : 96*
4. *Trewartha, G.T. (1969) : A Geography of Population : World Patterns, Johan Wiley and Sons, New York : 157.*
5. *Gosal, G.S. (1964) : Literacy in India : An Interpretative Study, Rural Sociology, Vol. 29, : 276.*
6. *श्रीवास्तव, एस0के0 (1990) : आर्थिक विकास बनाम निरक्षर उन्मूलन योजना, अंक 16, अक्टूबर, : 09*
7. *लेव, तोलस्तोय (1987) : शिक्षा स्तरीय रचनाएं, प्रगति प्रकाशन, मास्को : 141*
8. *तिवारी, सतीश चंद (2007) : गोरखपुर जनपद साक्षरता का परिवर्तित प्रतिरूप, उत्तर भारत, भूगोल पत्रिका, अंक 37, संख्या 1 जून, : 61–64*